

deutet auch (unter Anderm auch) *Asa foetida* AK. 3, 4, 9. अपि चापि
aber und abermals R. 2, 45, 9. पुनरु und भूयस् wiederum erhalten öfters
ein verstärkendes अपि R. GORR. 2, 44, 22. ÇĀK. 148. RAGH. 2, 52.
PAÑKĀT. I, 381. 402. 51, 21. 68, 23. 74, 9. 93, 15. 109, 4. 117, 3. VID.
195. 322. Einem अपि beim relat. entspricht ein zweites अपि beim demon-
str.: यथापि — तमपि M. 9, 273. ग्रामेष्वपि च ये केचित् — तानपि
271. — 4) auch, selbst, sogar, in der Regel auf das hervorgehobene
Wort unmittelbar folgend: य उन्निया अपि या (RV. 9, 108, 6: अप्या)
अक्षरश्मनि SV. I, 6, 2, 4, 8. बालो ऽपि (selbst wenn er ein Knabe ist)
विप्रो वृद्धस्य पिता भवति धर्मतः M. 2, 150. मुक्ता ऽपि वध्यते 6, 58. मरुतो
ऽप्येनसः sogar von grosser Sünde 2, 79. आपद्यपि हि घोरायाम् 113. न
हि मे प्रुध्यते भावः कदाचिद्विनशेदपि N. 8, 18. अज्ञायमानापि सतो 17, 17.
Hit. I, 75. ÇĀK. 53, 18. 76. 146. RAGH. 1, 9. एवमप्यमुखाविष्टा विभर्षि
परमं वयुः N. 13, 27. बलवदपि शक्तितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः ÇĀK. 2. किं
नु खलु गीतार्थमाकार्येष्टजनविरुद्धते ऽपि (beim folg. Beispiele steht
अपि zwischen nom. und praep.) बलवदुत्कापिठतो ऽस्मि 60, 5. शशाम
वद्यापि विना द्वापिः RAGH. 2, 14. रत्नं त्रिभुवने ऽप्येषा कन्योत्पन्ना गृह्
मम Vid. 7. — R. 1, 1, 5. 34. 49. 96. 4, 16. Hit. Pr. 5, I, 9. 32. 70. ÇĀK. 19.
34. 35. 10, 18. 27, 6. RAGH. 1, 84. 94. 2, 7. Nach einem compar.: बलं वाव
विज्ञानाद्भयो ऽपि हृ KHĀND. Up. 7, 8, 1. आत्मभुवः परो ऽपि ÇĀK. 186. अतः
परमपि प्रियमस्ति 113, 5. सकृदपि wenn auch nur einmal ÇĀK. 27, 2. अ-
द्यापि sogar jetzt, schon jetzt R. 5, 70, 18. तथापि dennoch, dessenunge-
achtet (s. u. तथा), यद्यपि selbst wenn M. 6, 67. 8, 164. 9, 319. (s. u. यदि).
Vorangehend: अपि तेषु त्रिषु पदेष्वस्मि येषु विश्वं भुवनमाविशे vs. 23,
50. यस्मादप्यस्त्रीलस्य श्रोत्रियस्य मुवं च्येव ज्ञायते At. Br. 1, 25. अपि सर्वं
जीवितमल्पमेव KATHOP. 1, 26. तस्मिंस्त्वपि किं वीर्यमित्यपीदं सर्वं दृश्यं
यदिदं पृथिव्यामिति KENOP. 18. अप्येकस्य सतः Nir. 7, 5. अप्यतौ M. 4, 128.
248. 11, 248. तदप्येकं व्यसर्जयत् N. 13, 34. अप्यर्कमपि पर्जन्यमपि वैवस्व-
तं यमम् । रणे योधयितुं शक्तः R. 5, 37, 17. सीतामपि मृत्युमुखागताम् 4, 45,
9. Daç. 2, 22. Hit. I, 125. अपि स्तुयाद्भानाम् P. 1, 4, 96, Sch. अपि गिरिं
शिरसा भिन्ध्यात् 3, 3, 154, Sch. (dieses अपि mit dem potent. ist das अपि
संभावने oder संभावनायाम् P. 1, 4, 96. 3, 3, 154. Vop. 25, 17. AK. 3, 4, 22,
[COL. 28,] 10. H. an. 7, 33. MĀD. avj. 47. Hierher gehört wohl auch das
अपि अर्हं H. an. 7, 33.) अपि जायां त्यजति P. 3, 3, 142, Sch. अपि सिञ्जेत्य-
लाण्डुं धिदेवदत्तम् 1, 4, 96, Sch. (अपि गर्हायाम् P. 1, 4, 96. 3, 3, 142. AK.
H. an. MĀD. avj. अपि निन्दमि शंकरम् Vop. 23, 8.) अपि चेत् sogar wenn
M. 10, 87. BHĀG. 4, 36. 9, 30. Selten vom hervorgehobenen Worte ge-
trennt: हरे सतो ऽपि obgleich fern seiend M. 8, 42. यस्य तस्य प्रसूतो
ऽपि selbst vom ersten Besten erzeugt Hit. Pr. 22. तृणैर्गुणात्ममापन्नैर्वध्यते
ऽपि हि दत्तिनः I, 30. Auf ein अपि beim relat. folgt ein अपि beim demon-
str.: अपि यत्सुकरं कर्म तदप्येकेन दुष्करम् M. 7, 55. यद्यपि — तथापि
(s. u. यदि und तथा). In Begleitung einer Negation übersetzen wir अपि
durch einmal, quidem: नैनं किन्त्वप्यपि वार्त्तिनेषु RV. 10, 71, 5. नाग्निर्द-
दाहं रोमापि Agni verbrannte nicht einmal ein Haar M. 8, 116. अचार्यश्च
u. s. w. नार्तेनाप्यवमत्तव्याः 2, 226. 227. 3, 51. 4, 109. 135. 5, 157. 8, 344. N.
11, 36. 13, 18. 24, 26. 25, 10. ÇĀK. 9. 74. 107. 149. 106, 3. Vid. 241. RAGH.
3, 6. 63. R. 1, 10. तानि — एकस्यापि न लक्ष्ये diese gewahre ich auch bei
Keinem von ihnen N. 5, 14. तदेकमपि हृषणं त्वयि न लक्ष्यते Hit. 25, 10.

अपि लङ्कितमधानं बुबुधे न RAGH. 1, 47. अपि (gehört zu कुलं राधवाणाम्)
क्यथ कुलं न स्याद्वाधवाणां कुतो (wie viel weniger) भवान् Daç. 2, 24.
Sehr häufig ist अपि in der Bedeutung sogar nach einem aus der Ver-
bindung eines interrog. mit चित् oder चन gebildeten indef. anzutreffen:
कथंचिदप्यतिक्रामन् selbst das kleinste Versehen begehend M. 3, 190. य-
त्किंचिदपि selbst etwas ganz Geringes 4, 228. 7, 137. किंचिन्निमित्तादपि
(gehört zum ersten Gliede der Zusammensetzung) मनःसंतापात् ÇĀK. 95,
14. नाङ्गं किंचिदपि स्पृशेत् er rühre kein Glied an, es sei welches es
wolle M. 4, 83. 2, 203. 3, 14. 7, 6. 8, 365. न — कदाचिदपि 4, 65. न कथं-
चिदप्यायास्यामि PAÑKĀT. 214, 4. Auch in dieser Bedeutung erscheint
अपि durch च verstärkt: स्वकादपि च वित्तात् M. 9, 199. कृते (sc. अपराधे)
ऽपि च (auch selbst wenn eine Beleidigung zugefügt worden wäre) न
मे कोपः N. 25, 10. — 5) aber, Gegensätze aneinanderreihend: मृगया u.
s. w. कामतो दशको गणः ॥ वैपुन्यम् u. s. w. क्रेताधनो ऽपि गणो ऽष्टकः ॥
M. 7, 47. 48. 51. शतं ब्राह्मणामाक्रुश्य तत्रियो द्वापमर्हति । वैश्यो ऽप्यर्ध-
शतं द्वे वा प्रुहस्तु (ein stärkerer Gegensatz) वयमर्हति ॥ 8, 267. धान्यं
दशभ्यः कुम्भेभ्यो हरतो ऽभ्यधिकं वधः । शेषे ऽप्येकादशगुणं दाप्यस्तस्य
च तद्धनम् ॥ 320. ज्ञातो नार्यामनार्यायामार्यो भवेदुष्णः । ज्ञातो ऽप्यनार्यादा-
र्यायामनार्य इति निश्चयः ॥ 10, 67. 1, 77. N. 12, 97. Auch durch च ver-
stärkt: पिता यस्य तु वृत्तः स्यात्स्त्रीवैद्यापि पितामहः M. 3, 221. Sehr häu-
fig beim Wechsel des Subjects unmittelbar nach dem neuen Subject:
ततः समाहिता गत्वा हृती वाङ्कमभ्रवीत् । दमयत्यपि कत्याणी प्रासा-
दस्था स्यैतत ॥ N. 22, 5. 12. गच्छतु भवत्यः । वयमप्याश्रमपीडा यथा न
भविष्यति तथा प्रयतिष्यामहे ÇĀK. 18, 13. MBh. in LA. 46, 16. SUND. 4, 13.
VIÇY. 7, 6. 7. 13, 23. R. 1, 4, 10, 27. 17, 35. 36. 2, 107, 16 — 18. RAGH. 12, 10. 20.
VID. 28. 50. 89. 91. 92. KATHĀS. 3, 52. ÇĀK. 24, 16. 29, 1. 31, 11. 61, 13. Hit. 15,
9. VET. 25, 13. 29, 6. Auch चापि R. 1, 4, 32. 3, 63, 29. अपि च N. 21, 23. अथ
— अपि KATHĀS. 4, 32. Vgl. das arab. ف . — 6) nur: मुहूर्तमपि (bedeutet
sonst: wenn auch nur einen Augenblick) तृप्तिश्च भवेद्भ्रातुर्ममैव च । कृतेरै-
तैरुक्त्वा तु मोदिष्ये शाश्वतीः समाः ॥ Hit. 2, 21. एकेनापि संधिना nur
unter einer Bedingung ÇĀK. Ch. 61, 5. तदापि (nur dann) प्रकृतुमर्हति
नान्यदा DĀ. 125, 6. (vgl. 126, 5. 6.) नाद्यापि nur heute nicht, d. i. a) jetzt
noch nicht, b) jetzt nicht mehr; s. die Belege u. अथ. In dieser Bedeu-
tung fällt अपि mit एव zusammen. — 7) wenigstens: यदि वा धनं नास्ति
तदा प्रीतिवचसाप्यतिथिः पूज्यः (v. 1. तावत् स्त. अपि) Hit. 19, 7. तृणानि
भूमिरुदकं वाङ्गतुर्थी च सूनृता । एतान्यपि सतो गेहे नाच्छिद्यन्ते कदा च
न ॥ M. 3, 101. = Hit. I, 53. — 8) ein pron. oder adv. interrog. geht
durch den Antritt von अपि in ein indef. über; s. u. किम्, कदा, कुत्र,
वह, कथम्. — 9) nach Zahlwörtern deutet अपि an, dass mit der ange-
gebenen Zahl die ganze vorhandene Anzahl erschöpft sei: द्वावपि beide
RAGH. 12, 93. AK. 2, 1, 5. KĀÇ. beim gaṇa सर्वादि. द्वयमपि Beides Siddh.
K. zu P. 3, 3, 19. H. 18. त्रीणामपि समुद्राणां (aller drei Meere) युगात्तेषु
समागमः ved. KĀÇ. zu P. 7, 1, 53. त्रयाणामप्युपायानां पूर्वोक्तानामसंभवे
M. 7, 200. त्रयाणामपि लोकानाम् R. 1, 21, 11. 3, 18, 46. (vgl. im Pāli:
तिसूपी लोकधातुम्, was BURN. Intr. 594. durch dans les trois mondes
mêmes übersetzt) चतुर्णामपि वर्णानाम् M. 1, 107. 3, 20. 5, 57. 8, 359. 11,
138. सामादीनामुपायानां चतुर्णामपि 7, 109. 11, 179. षट्पि H. 135. Vid.
35. Auch bei dabeistehendem pron.: द्वयोरप्येतयोः M. 7, 49. द्वयोरप्यन-